DTS

डीटीएस का उद्देश्य यह है
The Purpose of the DTS Is :

१. उपासना करने, परमेश्वर को सुनने और उसकी आज्ञा मानने, उन्हे सुसमाचार प्रचार के लिये भेजने प्रार्थना और निवेदन तरस खानेवाले कार्य करने, और ऐसे ही भाव प्रगट करना जिनसे परमेश्वर का संसार के प्रति हृदय प्रगट हो, शासद नयी मिनिस्ट्रीज बनाने में सहायता हो इन सब कामों के लिये लोगों को इकठ्ठा करना और चुनौती देना ।

२. पवित्रशास्त्र पर आधारित यीशू सरीखे चरित्र का विकास हो इसलिये परमेश्वर से सम्बन्धो में बढने के लिये प्रोहत्साहित करना और मार्ग दिखाना । पवित्रात्मा के कार्य, पवित्रशास्त्र के सत्य को व्यक्तिगत जीवन में उपयोग, विशेषकर वह जो परमेश्वर के चरित्रगुण से संबन्धित हो क्रूस और शक्तिदेनेवाला अनुग्रह ।

३. लोगों कि योग्यता को तीव्र करना कि वे लोगों से सीखे उनके साथ काम करे, उनके साथ भी जो विभिन्न सस्कृति से है, विभिन्न व्यक्तिमत के है, विभिन्न विचार धाराओं के है ।

४. प्रत्ये को सुसज करना कि वह परमेश्वर की योजनाओं के अनुसार यूविअमि के मिनिस्ट्रीज के परिवार में या उसके बाहर रहकर सेवा कर सके, भटके हुये तक पहुचने के समर्पण को मजबूर करना, विशेषकर उन तक जिन तक सुसमाचार नही पहुंचा है, गरीबों की सेवा, और समाज के सभी क्षेत्रों पर प्रभाव ।

५. यूविअमि के मूलभूत मूल्यों की शिक्षा देना और साथ ही उस संस्थाकी के मूल्यों का मीजो आयोजन करता है, और सेवा के विभिन्न अवसरों की जानकारी देना ।

डीटीएस के परिणाम
Outcomes of DTS

डीटीएस छात्रों को स्नातक बनाने का उद्देश्य रखता है

- परमेश्वर के चरित्र गुणों और मार्गो की विशालता के बारे में समझ देकर ।
- कि वे जिन बातो में परमेश्वर और मनुष्यों का संबन्ध करते है उनमें यीशू के समान हो जाये ।
- जो साथ रहने वाली पवित्रात्मा की उपस्थिती में मिल रही सामर्थ में लगातार सहयोग करते है ।
- जो परमेश्वर के अनुग्रह के कारण परमेश्वर की वाणी सुनते है और उसकी आज्ञा मानते है ।
- जो वचन की इसप्रकार खोज करते है कि विश्वास, मूल्य और आचरण के बदल डालते है ।
- जो प्राथना का जीवन मजबूत करता है, निवेदन और आत्मिक युध्द में मजबूत करता है ।
- ताकी वे और अधिक योग्यता से अन्य लोगों के साथ मिलकर कार्य करें, विशेषकर वे जोडने से अलग है ।
- जो मटके हुओं के साथ सुसमाचार बॉट सकते है और ऐसा करने के लिये जीवन भर समर्पित रहे ।
- ऐसा समर्पण कि राष्ट्रों के बीच में परमेश्वर के काम से किसी न किसी प्रकार से जुडे रहे, जिसमे गरीब और समाज के असहाय लोग है ।
- जो बुलाहट को समझते है और यूविअमि के मूल्यों को समझते हे और जिन्हे इस बात की जानकारी है कि यूविअमि के अन्तर्गत उन्हे विभिन्न प्रकार के अवसर उपलब्ध है ।
- अपने खुद के जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों की स्पष्ट समझ और अपने जीवन की दिशा का बोध ।
- जो या तो

  १) परमेश्वर की सेवा करते जाते है चाहे परिस्थितियॉ पहचानी हो या अनजानी हो ।

  २) आगे प्रशिक्षण (यूविअमि में या उसके बाहर) प्राप्त करके आगे की सेवकाई के लिये खुदको सुसज्ज करे ।

Revised Purpose Statement and Newly Created Outcome Statements approved by YWAM GLT on August 25, 2001 in Nairobi, Kenya

परमेश्वर का स्वभाव और चरित्रगुण

परमेश्वर से साक्षात्कार

I. God's Nature and Character

Encountering God

डी टी एस घोषणा करता है कि परमेश्वर खुदको लोगों पर प्रगट करता है

स्वीकार करता है कि परमेश्वर लोगों से संबन्ध रखने का इच्छुक है और अपना हृदय उनको देता है ।

देता है परमेश्वर और उनके मार्गों की जीवन बदलने वाली समझ

पीछा करता है पवित्रात्मा कि वह परमेश्वर के बारे में और सच्चाई को प्रकट करे ।

प्रोत्साहीत करता है अराधना, प्रार्थना और आज्ञाकारिता में व्यक्तिगत उत्तर को

सींचता है पवित्रशास्त्र के लिये भूख और प्यास

सुसज्ज करता है कि पवित्रशास्त्र को इस प्रकार पढ़ें कि वह विश्वासों को मूल्यों की, आचरण को बदले ।

बोला है — परमेश्वर को आवाज को सुनने की आदत ।

समझने और उपयोग करने के लिये विचार —

१. परमेश्वर को किसी ने सृजान ही है ।

२. परमेश्वर असिमीत है — वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, सर्वत्र उपस्थित, सृजनकर्ता, अनन्त और इससे भी अधिक

३. परमेश्वर त्रियेक है अर्थात उसमे तीन भिन्न व्यक्ति एक हो गये है (पिता, पुत्र और पवित्रात्मा)

४. चरित्रगुण के अनुसार परमेश्वर प्यार करने वाला, न्यायी पवित्र, बुध्दिमान, अनुग्रहकारी, दयालु, तरस खानेवाले, नम्र, क्षमा करनेवाला, दुख सहनेवाला, क्रोध करने में धीमा, विश्वास योग्य और इससे भी अधिक ।

५. परमेश्वर सम्पूर्ण सत्ताधारी है और लोगों का विशेष चुनाव करते हुये उनके इतिहास को वास्तव में नियन्त्रण करता है

६. परमेश्वर दोनों ही है —वह सृष्टी के बाहर है और सृष्टी में उपस्थित और कार्यरत है वह विश्वासी के मन में रहता है

७. परमेश्वर ने मनुष्यों की सृष्टी इसलिये की ताकि वह उनसे सम्बन्ध बनाये रखे । (विचारों के खुलेआदान—प्रदान, भावनाओं और निर्णयों से संबन्ध बनते है)

८. अराधना स्तुति करना परमेश्वर को सही प्रत्युत्तर देना है । परमेश्वर को एकजुट होकर या व्यक्तिगत रूप से अराधना करने क कई विभिन्न मार्ग है । यह अराधना हमारे जीवन शैली में प्रकट होनी चाहिये ।

९. परमेश्वर लोगों को बुलाता है कि उससे बाते (प्रार्थना) करके अपनी आवश्यकताओं और परेशानियों को बताये ।

१०. परमेश्वर अपने हृदय को बातों को अपने लोगों से बॉटना चाहता है ।

११. यीशू के नाम में कही प्रार्थना से सचमुच फर्क होता है ।

१२. पवित्रात्मा लोगों से वक्तिगत रूप से और स्पष्टता पूर्वक कई प्रकार से बोलता है । (जैसे एक अन्तरआवाज एक चित्र, दूसरे लोग) ये व्यक्तिगत शब्द या सूचनाये हमेशा बाइबलल के अनुसार होना चाहिये और दूसरो से इसकी पुष्टी होनी चाहिये ।

१३. परमेश्वर भटके हुये को खोजता है और इच्छा करता है कि सब लोग प्रभूयीशू के द्वारा बचाये जाये ।

१४. यीशू मसीह परमेश्वर के स्वरूप का अन्तिम प्रगटीकरण है।

१५. परमेश्वर का सामान्य ज्ञान सभी लोगों को सृष्टी के द्वारा उपलब्ध है ।

१६. परमेश्वर का खुद का विशिष्ट प्रगटीकरण और उसके उद्देश्यों को पवित्रशास्त्र में लिखा या है ।

१७. पवित्रशास्त्र परमेश्वर के द्वारा दिया गया ओर आधिकारिक वचन है और हमारे जीवन का प्राथमिक स्तर है ।

१८. पवित्रशास्त्र का उपयोग ऐसे हो कि हमारे विश्वास को मजबूत करे, हमारे मष्तिष्क को नया करे, और हमें सही चुनाव करने के बारे में सूचना दें (पढ़ो, मननकरो, अध्ययन करो, याद करो इत्यादि)

१९. पवित्रात्मा परमेश्वर के सत्य को सिखाने वाला शिक्षक और प्रगट करता है ।

२०. जिन सत्य बातों को हम पहले से ही जानते है उनपर विश्वास करना और आज्ञा मानना आगे सत्य की खोज के लिये महत्वपूर्ण है ।

मनोभाव जिसका पालन पोषण करता है

परमेश्वर के साथ संबन्ध बनाने में – भरोसा, विश्वास पवित्रता, प्रेम, आश्रित होना, स्वामीभक्ती, नम्रता, सहयोग, परमेश्वर से सतत संचार की इच्छा, परमेश्वर को जानने और उसे दूसरे को बताने की भूख और लगन, आशा, साहस, समर्पण, अराधना, नम्रता, सिखायेजाना, आभारी होना, संतोष, पाप से घृणा , परमेश्वर मे बने रहना, परमेश्वर और सत्य की और अधिक खोज, पवित्रशास्त्र के लिये प्रेम, प्रश्नपूछना, समझ और बुध्दि की खोज करना, परमेश्वर की आवाज सुनने का विश्वास होना ।

करने योग्य गतिविधियॉ :

(ये पूरे डीटीएस में होना चाहिये । कुछ को रोजनामचे में ढ़ाला गया है कुछ को अन्तर क्रिया के रूप में प्रगट किया गया है । उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने इस प्रकार से अपने को व्यस्त कर लेने की जबाबदारी लेना है ।)

व्यक्ति, राष्ट्रों और सृष्टी के प्रति परमेश्वर का अभिप्राय परमेश्वर के नजरिये से सारे जीवन को देखना

१. भिन्न भिन्न तरीकों से व्यक्तिगत या सामूहिक तौर पर परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना ।
२. सक्रिय रूप से परमेश्वर की आवाज सुनना और आज्ञा मानना
३. परमेश्वर के वचनों को लगातार पढ़ना, अध्ययन करना, मनन करना, और उपयोग करना ।
४. सक्रिय रूप से दैविक भावों का विकास करना परमेश्वर के वचनों को खोजकर ।
५. अपने हृदय के बोझ को परमेश्वर के साथ प्रार्थना में ईमानदारी से प्रगट करना ।
६. नियमित रूप परमेश्वर के साथ अकेले में बिताने के लिये समयनिकाले ।
७. पवित्रआत्मा पर आश्रित जीवन जीये ।
८. आपसी संबन्धो और परिस्थितियों में परमेश्वर के चरित्रगुणों को दिखाने का प्रयास करें ।
९. विश्वास के साथ निकले, परमेश्वर पर विश्वास करे कि वह आपको जो वह कह रहा है उसे पूरा करने के लिये लगनेवाली सारी जरूरतों को पूरा करेगा ।
१०. मटके हुओं को ढुहों और उनसे मसीह के बारे मे बताओ ।
११. इस श्रेणी से संबन्धित पवित्रशास्त्र के पाठ को पढ़ो और मनन करो ।

II. God's Intention for Individuals, Peoples and Creation

Seeing All of Life From God's Perspective

डीटीएस घोषणा करता है प्रत्येक व्यक्ति, जाती और राष्ट्र के लिये परमेश्वर के उद्देश्यों की

चाहता है कि लोगों को प्रोहत्साहित करे कि वे सोच समझकर ऐसे चुनाव करें जो परमेश्वर को खुशी और महिमा देते है

सिखाता और पालन करता है जिम्मेदार ले पालक पन जीवन के हर क्षेत्र में

बढ़ाता है इस बात को कि एक व्यक्ति भी किसी भी समुदाय, स्थान या समाज में परिवर्तन ला सकता है

प्रोहत्साहित करता है – विचारो और कार्यों में सृजनात्मकता को ।

व्यवहार में लाता है आत्मा की अगुवाई में कहा गया निवेदन जिसमें उसे जिसके लिये प्रार्थना हो रही है और उसे भी जो प्रार्थना कर रहा है, बदल डालने वाला प्रभाव होता है ।

समझने और उपयोग करने के लिये विचार

१. परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है उन सबकी रचना की

२. सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये है और इस कारण वे सारी सृष्टी में सबसे बहुमूल्य है ।

३. जाति, लिंग, उम्र, सामाजिक स्थिती कुछ भी प्रत्येक व्यक्ति का मूल्य समान है, प्रत्येक व्यक्ति अनोखा है और परमेश्वर के लिये महत्वपूर्ण है ।

४. लोगों ने इस प्रकार साथ रहना और कार्यकरना है कि उससे परमेश्वर का आदर हो और उसकी महिमा हो ।

५. परमेश्वर से स्वयं से और अन्य लोगों से सम्बन्ध जीवन का अति मूलभूत भाग है । दस आज्ञा ओं से इन सम्बन्धों का स्तर तय होता है ।

६. प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार रचा गया है कि वह परमेश्वर के अस्तित्व को पहचानता है और उसे एक विवेक दिया गया है जो उनको यह जानने में मदद करता है कि क्या सही है ।

७. परमेश्वर ने लोगों को योग्यता दी कि वे सृजन करे, नये विचार रखे और हल ढूढ़े ।

८. परमेश्वर ने लोगों को इस योग्य और काबिल बनाया कि वे ऐसे चुनाव कर सके जो इतिहास को प्रभावित करते है ।

९. परमेश्वर ने यह चुना कि लोगों के साथ मिलकर अपने उद्देश्यों को पूरा करे । वह लोगों को उसके द्वारा दी गई वरदानों और काबिलियतों का आदर करता है उनके पहल करने और चुनाव करने के लिये जगह बना कर ।

१०. प्रार्थना में परमेश्वर और लोगों के बीच बातचीत होती है और इनसे मनुष्यों, जगहो, परिस्थितीयों में परमेश्वर के उद्देश्यों को आगे बढ़ाया जाता है । (प्रार्थना में वचन भी पढाया जा सकता है)

११. परमेश्वर ने मनुष्यों को सारी सृष्टी के लिये लेपालक ठहराया है । लेपालकपन में परस्पर संबन्ध, वातावरण, व्यक्तिगत स्वास्थ श्रम का मूल्य, सही चुनाव करना, आराम का महत्व, उदारता धन दौलत, आत्मिक वरदान, मेहमानबाजी और समय का मूल्य ।

१२. परमेश्वर यह चाहता है कि प्रत्येक समूह उस की उपासना करे और उसकी महिमा के लिये जिये ।

१३. परमेश्वर चाहता है कि लोग फल लायें और संख्या में बढ़े, समाज बनाये, राष्ट्र बनाये, सभ्यता का विकास करे जो उसके चरित्रगुणों को प्रदर्शित करते है ।

१४. परमेश्वर पवित्रशास्त्र में कुछ मूलभूत सिध्दान्तों को उजागर करता है जिसपर समाज या राष्ट्र का निर्माण किया जाये । इन सिध्दान्त राष्ट्रों में अलग २ तरह से लागू किया जा सकता है परिवार, कलिसिया, कला, मनोरंजन, अर्थव्यवस्था, संचार माध्यम, स्वास्थ, शासन, शिक्षा के क्षेत्र में ।

१५. परमेश्वर ने मनुष्यों को इस योग्य बनाया कि वे एक दूसरे की अनेक तरह से मदद करे । सभी उद्योगों का एक सा मूल्य है और यह एक साधन हो सकता है जिससे एक विश्वासी परमेश्वर को महिमा दे सकता है । (उदा. किसान, पास्टर, राजनेता, कलाकार, दुकानदार, नर्स, शिक्षक, प्रचारक)

मनोभाव जिसका पालन पोषण करना है ।

परमेश्वर और सृष्टी के संबन्धी में प्रत्येक मनुष्य प्राणी के लिये आदर और सम्मान, सभी आयु के लोगो के लिये, सभी लिंग, सामाजिक या आर्थिक रूप की पृष्ठभूमिवाले, प्राणियों के लिये आदर माना दूसरों की सराहना करना और उनको सम्मान देना । उनकी संस्कृति, व्यक्तित्व, और वरदानो की सराहना । स्वागत करने वाले, सत्कार करनेवाले, मिलबॉटकर रहनेवाले, उदार, सारी सृष्टी के लिये आदर और जबाबदारी इस बातकी चेतना कि सभी परमेश्वर की ओर से आया है और परमेश्वर की महिमा के लिये ही उपयोग किया जाये । परमेश्वर को कार्य के द्वारा महिमा देने की इच्छा ईमानदारी (आज्ञाकारिता) स्वामीभक्ती, उत्कृष्टता, धैर्य, सेवकाई, संभावनाओ की खोज, हल और उनके रचनात्मक पर्याय । आशावान, प्रसन्नचित्त, संतोषी, शुध्द विवेक पाने और बनाये रखने की इच्छा, परमेश्वर के नैतिक कानून को मानना और सम्मान देना ।

करेन योग्य गतिविधियॉ

(ये पूरे डीटीएस में होना चाहिये । कुछ को रोजनामचे में ढ़ाला गया है कुछ को अन्तर क्रिया के रूप में प्रगट किया गया है । उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने इस प्रकार से अपने को व्यस्त कर लेने की जबाबदारी लेना है ।)

१. परमेश्वर के उद्देश्य राष्ट्रो, संस्कृतियों और समाज तक पंहुचे इसके लिये प्रार्थना करे।

२. सारी जिम्मेदारीयों को जैसे कामके कर्तव्य, गृहकार्य आदि को ईमानदारी से पूरा करना ।

३. रूपया पैसा, समय और शक्ति को जबाबदारी पूर्ण ढंग से संभालना ।

४. व्यक्तिगत और सामाजिक वस्तुओं का आदर करना और जबाबदारी लेना ।

५. प्रत्येक व्यक्ति का मुल्य और अनोखेयन को स्वीकार करने और प्रगट करने के अवसर ढुंढ़ना ।

६. अपनी संस्कृति को आदरपूर्वक व्यक्त करना और दूसरों के सांस्कृतिक प्रचार को अपनाना ।

७. एसे समुदायों की जानकारी हासिल करे जिनतक सुसमाचार नही पहुँचा है ।

८. यदि किसी संम्बन्ध में कटुता आती है तो उसे सुधारने के लिये खुद जिम्मेदारी ले ।

९. परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम को व्यवहारिक तरीक से प्रकट करे ।

१०. उदारता और मेहमान नवाजी के कार्य करे ।

११. नये विचारों की खोज करना, प्रश्न पुछना, ध्यान से सुनना, संभावनाओं पर विचार करना और हल बताना ।

१२. इस श्रेणी से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र पाठकों पढ़ना और मनन करना ।

परमेश्वर का उध्दार : पाप और क्रूस

यीशू को प्रभु स्वीकार करना

III. God's Redemption : Sin and The Cross

Recognizing Jesus as Lord

डीटीएस मानता है कि यीशू मसीही परमेश्वर है और वही एकमात्र मार्ग है जिससे उध्दार मिल सकता है ।

स्वीकार करता है कि शैतान और उनकी योजनायें एक वास्तविकता है ।

प्रचार करता है, यीशू के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान का जो शैतान को निरस्त्र और नष्ट करने के लिये किया गया परमेश्वर का सफल कार्य है ।

बताता है कि यीशू ही प्रभु है और उसकी आज्ञा मानने की जरूरत को मानता है ।

उत्पन्न करता है प्रभू का भय और पाप के प्रती घृणा ।

समझने और उपयोग करने के लिये विचार :

१. षैतान एक सृजित प्राणी है जिससे घमण्ड में परमेश्वर के विरोध विद्रोह किया ।

२. षैतान बुरा है । वह धोखा देनेवाला, आरोप लगानेवाला, चोर, लुमाने वाला और झुठा है । परमेश्वर का शत्रु होने के कारण वह परमेश्वर और उसके उद्देश्यों से हमेशा लडता है ।

३. मनुष्य और सृष्टी आदम और हवा द्वारा किये गये पाप के कारण प्रभावित हुये है । उन्होने शैतान के लिये दरवाजे खोल दिया कि वहह उनसे सृष्टी का परमेश्वर द्वारा दिया अधिकार छीन ले ।

४. परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन पाप है ।

५. सभी ने पाप किया है और परमेश्वर के न्याय के भागी है

६. पाप के सामान्य प्रभावों में लगातार कष्ट उठाना, बीमारी और मृत्यू है ।

७. सारे राष्ट्र, संस्थाये और संस्कृतियॉ किसी न किसी हद तक गैर–पवित्रशास्त्र आधारों पर बनी है ।

८. मनुष्य जाति पर अपने प्रेम के कारण, परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र यीशू को भेजा ।

९. यीशू यद्दपि वहह परमेश्वर था, उसने परमेश्वरने रहने के सारे अधिकारों को छोडा और पूरी तरह मनुष्य बना और अपना जीवन परमेश्वर से बिना संबन्ध तोडे बिताया ।

१०. यीशू को परमेश्वर की आत्मा के द्वारा पढ़ाया गया, मरा गया ताकि वह परमेश्वर के कार्य करे परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करे और परमेश्वर के चरित्र गुण को प्रत्येक परिस्थिती में प्रगट करे ।

११. यीशू की हालांकि हर प्रकार से परिक्षाली गई तो भी उसने पाप नही किया ।

१२. यीशू क्रूस पर मरा, और संसार के पापों के लिये उसने परमेश्वर के न्याय के अनुसार दुख उठाया ।

१३. यीशू अपने शरीर सहित मुर्दो में से जी उठा और अपने चेलो को ४० दिनों तक दिखाई दिया ।

१४. ४० दिनों के बाद यीशू स्वर्ग में अपने उचित स्थान पर चढ गये जहॉ वह अभी भी है ।

१५. अपने जीवन, मृत्यू और पुनरूत्थान द्वारा यीशू ने पाप की ताकत को तोडा, शैतान को हराया और परमेश्वर के राज्य की स्थापना की शुरूवात की ।

मनोभाव जिनका पालन पोषण करना है

षैतान है इस वास्तविकता के संबन्ध पाप और परमेश्वर जैसे क्रूस द्वारा प्रगट किये जाते है : साहसी योध्दा, उपासना, बुराई से घृणा, परमेश्वर से मिने की इच्छा, नम्रता, धन्यवादी होना, दूरदर्शिता, परमेश्वर से सहायोग, शैतान का विरोध, यहह विश्वास की परमेश्वर मेरे साथ है, परीक्षाओं पर विजयी, पवित्रता, बलिदान देने को उत्सुक, विश्वास, प्रेम, आशा, सहनशील, दुख उठाने वाला, आशावान, अयोग्यता, सतर्क रहने वाला, संसार बदलने वाला ।

करेन योग्य गतिविधियॉ

(ये पूरे डीटीएस में होना चाहिये । कुछ को रोजनामचे में ढ़ाला गया है कुछ को अन्तर क्रिया के रूप में प्रगट किया गया है । उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने इस प्रकार से अपने को व्यस्त कर लेने की जबाबदारी लेना है ।)

१. अपने आसपास शैतानी गतिविधियों को पहचानना और सामना करना ।
२. जैसा परमेश्वर पापको देखता है वेसे ही खुद भी देखता
३. परमेश्वर को यीशू के लिये धन्यवाद देना
४. क्रूस द्वारा परमेश्वर के चरित्रगुण और उद्देश्यों को जैसा प्रगट किया जाता है उसके उत्तर में परमेश्वर की उपासना करना ।
५. जैसा यीशू ने किया वैसेही लोंगों को परमेश्वर से जोडने का प्रयास करना ।
६. यीशू को अनुकरण करके एक दूसरे की सेवा करना
७. आसपास के संस्कृतियों में गैर पवित्रशास्त्र आधारों को पहचाननाा और उन्हें उखाड फेकने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करना ।
८. इस श्रेणी में दिये गये विचार से संबन्धित शास्त्र पाठ को पढ़ना और मनन करना ।

परमेश्वर का परिवार–उनके बच्चे और उसकी कलिसिया

यीशू के समान बनना

IV. God's family : His Children & His Church

Becoming more the Jesus

डीटीएस मजबूत करता है व्यक्ति का ज्ञान और परमेश्वर में विश्वास की वह पिता, बचानेवाला और मित्र है ।
पालनपोषण करना व्यक्तिगत मूल्यों की और परमेश्वर के महत्व को चतना को ।
देता है प्रत्येक को अपना भूत, वर्तमान और भविष्य क्रूस पर समर्पित करने के अवसर ।
जोर देता है पवित्रशास्त्र के प्राथमिक कार्य पर और पवित्रात्मा के कार्य पर, यीशू के समान बनने की प्रक्रिया में।
जगह बनाता है ताकि पवित्रात्मा लोगों में और उनके द्वारा कार्य करे ।
विश्वास करता है कि व्यक्तिगत पवित्रता जरूरी है और केवल परमेश्वर के अनुग्रह पाने से ही मिलती है ।
मानता है और घोषणा करता है परमश्वेर के प्रेम की और उसकी कलिसिया के प्रति समर्पण ।
बढावा देता है स्थानीय कलिसिया में भाग लेना और सहयोग देना ।
तैयार करता है एक वातावरण जहॉ पर एकता और अनेकता को समान मूल्य दिये जाते है ।
बढावा देता है स्वस्थ संबन्धो की प्रथा को और ऐसे ही अन्य संबन्ध बनाने की आवश्यकता को ।
अक्सर देता है ताकि व्यक्ति की आत्मिक वरदानों की खोज करना और प्रदर्शित करे दूसरों की सेवा करने के लिये
वकालत करता है एक दूसरे से सीखने की ।

समझने और उपयोग करने के लिये विचार :

१. प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर की आत्मा दी गई है, जो अनन्तजीवन देता है और जो परमेश्वर के परिवार मे मिलाता है ।

२. पवित्रात्मा विश्वासी पर परमेश्वर के वचनों को प्रगट करता है और उसे लगातार ढ़ाढ़स देता है परमेश्वर के प्रेम का और यह भी कि यीशू उनमें रहता है ।

३. पवित्रात्मा आराम देने और चंगा करने (शारिरीक और भावनात्मक) दोष लगाने, पढ़ाने और विश्वासी को पुन: स्थापित करने का कार्य करता है ।

४. परमेश्वर विश्वासी के आपेक्षा करता है कि वे एक निष्पाप जीवन व्यतीत करेगें, ज्योकिं परमेश्वर को दूसरों से जोडता है जैसे यीशू ने किया ।

५. मसीह सदृश्य जीवन (आत्मा के फल लाने का) मंत्र है लगातार पवित्रात्मा से जो अन्दर रहती है उससे शक्ति प्राप्त करना ।

६. शैतान, हालांकि क्रूस के द्वारा हरा दिया गया है फिर भी लोंगों को धोखा देने में रहता है और उन्हे पाप करने के लिये प्रेरित करता है ।

७. पवित्रात्मा और परमेश्वर का अनुग्रह विशसी के अन्दर हमेशा उपलब्ध है जो उन्हे शक्ति देता है कि वे शैतान के लालचो/झूठों को पहचाने, उनका सामना करे और उन पर हावी हो और उन्हे बन्धनों से छुडाये (कुछ परिस्थितीयॉ में आत्मिक बन्धनों से मुक्ति जरूरी हो सकती है ।)

८. क्षमा करना और अपने अधिकार छोडना ये मंत्र है यीशू सरीखे जीवन जीने के लिये ।

९. प्रत्येक विश्वासी की जबाबदारी होती है कि वह पवित्रात्मा से सहयोग करे कि सत्य पर विश्वास करे और आज्ञा माने । इसके साथ ही, उसे अपने झूठे विश्वास और पापमय जवीन (उदा. घमण्ड, अविश्वास), विध्वंसकारी आदते (जैसे गप्पे लगाना, लालची होना), आज्ञा ना मानने के अन्य क्षेत्र, पर पश्चाताप करता है, और जब सही हो तो सुधार करना ।

१०. प्रत्येक विश्वासी यीशू मसीह के शरीर का भाग है । प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है तौभी उसे शरीर के बाकी सदस्यों की जरूरत होती है ।

११. कलिसिया के दो श्रेणी है – विश्वासियों की स्थानीय सभा (स्वरूप के अनुसार) और मिशन एजेन्सी (भ्रातृत्व संघ)

१२. विश्वासियों से आपेक्षा है कि वे एक साथ जुडकर उपासना करे और वचन को सुने और सहभागिता करे ।

१३. परमेश्वर मसीह की देह को अनेक आत्मिक वरदान (जैसे भविष्यवाणी करणा, पढ़ाना, प्रोहत्साहन देना) देता है । विश्वासियों ने अपने आत्मिक वरदानों को दूसरे व्यक्तियों को यीशू में तैयार करने में उपयोग करें ।

१४. विश्वासियों ने अपने प्रत्येक संबन्धों में यीशू को प्रगट करना है । ईश्रीय स्वस्थ संबन्ध एक दुसरे की सह लेते है, शुध्द, आदरणीय, प्रेम करनेवाले, आदरणीय नम्र, और एकदूसरे पर आधारित होते है ।

मनोभाव जिनका पालनपोषण करना है –

व्यक्तिगत विश्वास को दृढ़ करने, चरित्र का विकास करने, और सही संबन्धो के विषयमें : विश्वास, आत्मापर अबलम्बन, परमेश्वर के प्रेम का निश्चय और समर्पण भरोसा, अपनत्व वयस्कता, जबाबदारी, धैर्य, अपने और दूसरों को सहन करना, संतोष, सिखाने योग्य नम्रता, आशा, परमेश्वर और दूसरों पर विश्वास बदलने की इच्छा, एकीकरण के लिये इच्छा, धन्यवादिता, पाप को पहचानकर जल्दी ही दूर कटना, क्षमा करना, पश्चाताप, पारदर्शिता, दूसरों के साथ दया, अपने अधिकार छोडने की इच्छा, लोगों का सम्मान करे, लेन–देन दूसरों को आदर देना सीखना, समर्पण, स्वामीभक्ती, सेवा, नम्रता, दुख बॉटना, सरलल हृदय, चिन्ता करने वाला, दया, एकदूसरे की सह लेना, टिम सदस्य, खुद पर नियन्त्रण, स्वामीभक्त, शान्तियोग्य, परमेश्वर के चरित्रगुणों के प्रति स्वामीभक्ति, परमेश्वर के प्रेम के प्रति मेह्द, परमेश्वर के सुझावों के लिये आदर ।

करेन योग्य गतिविधियॉ

(ये पूरे डीटीएस में होना चाहिये । कुछ को रोजनामचे में ढ़ाला गया है कुछ को अन्तर क्रिया के रूप में प्रगट किया गया है । उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने इस प्रकार से अपने को व्यस्त कर लेने की जबाबदारी लेना है ।)

१. खुद की बढ़ी के लिये सक्रिय जबाबदारी लेना
२. भूतकाल की चर्चा में, अधिकारों को छोडने में, पाप, दूसरों को क्षमा करना इत्यादि में परमेश्वर से और दूसरों से उचित प्रतिक्रीया करना ।
३. उपासना और मिनिस्ट्री के समय आत्मा के द्वारा हो रहे कार्यो में सहयोग करे ।
४. आत्मा के फलों को (प्रेम, खुशी, शांति, धीरज, दयानुता, अच्छाई, विश्वास, कृपा, संयम) प्रगट करना ।
५. लालच को पहचाने और उसका सामना करने को खडे हो ।
६. एक दूसरे से आत्मा की मजबूती लाने के लिये एक दूसरे के प्रति जबाबदार हो ऐसे संबन्धो का विकास करना
७. एक टीम के रूप में कार्य करें जिसमें हर सदस्य एक अनोखा सहयोग देता है और योग्य जबाबदारी संभालता है ।
८. जहॉ उचित हो वहॉ पर अपने वरदानों और व्यक्तित्व के अनुसार अगुवाई करने की पहल करना ।
९. एक दूसरे को छोटे समूह में सेवा करते हुये अपने खुद के आत्मिक वरदानों को खोजे, समझे और उपयोग करे।
१०. स्थानीय कलिसिया के कार्यो में योग्यरूप से भाग ले ।
११. एक दूसरे की सहायता करे, एक दूसरे की चिन्ता कर, आशिष से उत्साहित करके, बॉट के, घोषणा करके, सेवा के द्वारा, प्रार्थनाद्वारा, देने के द्वारा
१२. विभिन्न लोगों से जिनमें वे भी शामिल हे जो आपसे भिन्न है सबन्ध बनाओं।
१३. दूसरों को सफल बनाने के लिये प्रयास करो ।
१४. खेलकूद में आनन्द लो, एकसाथ मनोरंजन करो ।
१५. एक दूसरे से सीखो–सुनकर, बोल कर, प्रश्न पूछकर, विवाद द्वारा, चर्चा करके, एक छोटे समूह में रहकर ।
१६. इस श्रेणी में दिये गये विचार से संबन्धित शास्त्र पाठ को पढ़ो और मनन करो ।

परमेश्वर का वचन : उसकी बुलाहट और आज्ञा

यीशू के कार्य को करना

V. God's Word : His call & His Commission

Doing the Works of Jesus

डीटीएस विश्वास करता है कि परमेश्वर परस्पपर कार्यरत है और लोगों को अपने संसार की जाबाबदारी देता है ।

सुसज्ज करता है कि अंधकार के साम्राज्य को सत्य से भेद दे ।

चुनौती देता है कि व्यक्ति सभी भाषाओं के लोग, सब जातियॉ, और सब लोग परमेश्वर के सिंहासन के पास अपना स्थान प्राप्त करते है ।

घोषणा करता हे कि परमेश्वर सभी विश्वासियों को समाज के कोई भी श्रेत्र में पूर्ण कालिन सेवा के लिये बुलाता है

प्रोत्साहित करता है कि प्रत्येक जन पवित्रआत्मा की सामर्थ पाये और सुसज्ज हो जाये ।

आशा लाता है – लोगों और राष्ट्रों में

उत्तेजित करता है, सुसज्ज करता है और खोयें हुओ के साथ सुसमाचार बांटने के लिये अवसर प्रदान करता है ।

पालन करता है लोगों के लिये निवेदन और आत्मिक युध्द का

देता है परमेश्वर के दया और करूणा वाला हृदय और इसे उन पर प्रगट करता है जिन्हे जरूरत है ।

घोषना करता है कि एक विश्वासी जो पवित्रात्मा के प्रति संज्ञाशील है वह उस महान आदेश को पूरा करने विशेष सहयोग दे सकता है ।

चुनौती देता है कि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के साथ अपनी व्यक्तिगत जीवन की दिशा का स्पष्टीकरण कर ले।

<u>समझने और उपयोग करने के लिये विचार –</u>

१. स्वर्ग पर चढ़ने से पहले यीशू ने अपने चेलो को आज्ञा दी की सारे संसार में जाकर परमेश्वर के राज्य को प्रचार करो और को सिखाओ, दुश्मन से वह छीन लो जो परमेश्वर का है

२. एक तरीका जिससे परमेश्वर का राज्य पूरे संसार में फैलता है व यह है कि जब विश्वासी लोग एकत्रित होकर प्रार्थना के द्वारा दुश्मन की सब चालो को मात देते है ।

३. विश्वासी जिसे पवित्रात्मा के कार्य से सामर्थ मिली है वह दुश्मन के कार्यो को भी हरा सकता है विपरीत आत्मा के रूप में प्रतिक्रया द्वारा (घमण्ड के साथ नम्रता, लालच को उदारता से)

४. परमेश्वर सभी विश्वासियों को बूलाता है कि वे अपने जीवन के हर पहलू से परमेश्वर की महिमा करे ।

५. प्रत्येक विश्वासी को यह सौभागय है और जबाबदारी भी वह सुसमाचार की प्रभावशाली ढ़ंग से सुनाने के लिये तैयार रहे (डीटीएस में कर्मचारीयों को लोगों से बातीचत करने के लिये लगनेवाला प्रारंभिक ज्ञान सिखा कर सुसज्ज किया जाता है)

६. कई देश अभी है जहॉ पर लगभग नही के बराबर सुसमाचार प्रचार हुआ है । प्रत्येक विश्वासी का यह सौभग्य और कर्तव्य है कि वह इस आवश्कता में किसी न किसी प्रकार से सहयोग करे (प्रार्थना करे, जाये, दे समर्थन दे)

७. प्रत्येक विश्वासी का सौभाग्य और कर्तव्य है कि वह परमेश्वर को दया और करूणा को उन लोगों पर प्रगट करे जिन्हें इसकी आवश्यकता है ।

८. प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर ने कुछ योग्यताओं सहित, वररदानो और व्यक्तित्व सहित । यदि व्यक्ति यह समझे कि परमेश्वर की योजना क्या है तो उससे उस व्यक्ति को अपनी विशिष्ट बुलाहट का चुनाव करने में सहायता मिलती है ।

९. विश्वासी परमेश्वर के साथी कार्यकर्ता है जैसे वे परमेश्वर और एकदूसरे से घनिष्ठता बढ़ाते है वैसे वे परमेश्वर की बुलाहट को समझते है और यह भी कि वह उसे पूरा करने के लिये उन की किसप्रकार अगुवाई कर रहा है ।

१०. पवित्रात्मा विश्वासियों को उनकी बुलाहट को पूरा करने के लिये सुसज्ज और सामर्थी बनाता है ।

११. दूसरों द्वारा की गई प्रार्थना और सलाह एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती है एक व्यक्ति को अपनी बुलाहट को जानने और उसमें चलने की योग्यता बनाने और मजबूत करने में

१२. परमेश्वर लोगों / राष्ट्रों से प्रेम करता है, आदरकरता है और उनके लिये उनका उक उद्देश्य है (केवल कुछ ही व्यक्ति यों या समूह या राष्ट्रों के लिये नही)

१३. यीशू की देह का सौभाग्य और कर्तव्य है कि वे परमेश्वर के सब लोगों / समूहों के लिये उध्दार की योजना में सहयोग दे ।

१४. परमेश्वर सभी विश्वासियों को बुलाता है कि वे समा के एक या अधिक भागों में सेवा करे । वह किसी को राष्ट्रों में बुलाता है, संस्कृति में या ऐसी परिस्थितियों में जो अनजान है जबकि किन्ही दूसरों को वह उन परिस्थितीयों में कार्य करने बुलाता है जो जानी पहचानी है ।

मनोभाव जिनका पालन पोशण करना है –

परमेश्वर के बुलाहट और आदेश के सम्बन्ध में : प्रसन्नता धन्यवाद भेटें, धीरज, सहनशीलता, स्वामीभक्ती, आज्ञाकारिता समझौता नही करना, पराजय स्वीकारना, दासत्व, जिम्मेदार लेपालकपन, निस्वार्थ, दूसरों के सहयोग के प्रतिआदर, स्वइच्छा को छोडना, अपने अनोखापन और बुललाहट को मनाना, इरादो में ईमानदारी, आशा, प्रेम, इस बातकी चेतना कि हम लेखा देगे, परमेश्वर की इच्छा को करने मे खुशी परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा, करूणा, दया, समर्पण, समझौता, सुनना, आदरणीय, बुध्दिमानी, साहसी, नम्रता, पूछताछ, समझाने की कोशिश, प्रेमपूर्ण, विश्वासमें भटके हुओं के लिये बोझ, उत्साही, दूसरों से सीखनेकी इच्छा, दूसरों से सहयोग, विश्वास पात्रता, सहनशीलता, दूसरों के प्रति अनुग्रहनपूर्ण, प्रेम से प्रेरित, दूसरी संस्कृति को स्वीकार करना ।

करेन योग्य गतिविधियॉ

(ये पूरे डीटीएस में होना चाहिये । कुछ को रोजनामचे में ढ़ाला गया है कुछ को अन्तर क्रिया के रूप में प्रगट किया गया है । उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने इस प्रकार से अपने को व्यस्त कर लेने की जबाबदारी लेना है ।)

१. प्रार्थना के द्वारा परिस्थियों में शत्रुकी ओ से होनेवाले विरोध को पहचानना और मात देना ।
२. इसबात की चिन्ता किये बिना क अन्य लोग हमसे कैसा बर्ताव करते है, हमेशा परमेश्वर ने बताये अनुसार प्रतिक्रिया करना ।
३. व्यक्तिगत और सामूहीक प्रार्थना में समय बिताये, ताकी परमेश्वर के शब्दों और विचारों को समझ सके और उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रभावशाली कदम उठ सके ।
४. भटके हुअे को खोजना और जहॉ संभव हो वहॉ उनसे संबन्ध स्थापित करना ।
५. राष्ट्रों और समूहो और समाज में भटके हुये लोगों के लियें प्रार्थना करना, और विशेष व्यक्तियों के नाम लेकर प्रार्थना करना।
६. जहॉ भी जजाये यीशू के बारेमें बताने को तैयार रहे (जैसे दुकान में, बस मे, सडक पर, पडोस में)
७. आम सभा में परमेश्वर के वचन का सही प्रचार करे ।
८. परमेश्वर का आपके वर्तमान जीवन में क्या स्थान है इसका निश्चय करे, इसके अनुसार चले और इसके बारे में गवाही के तौर पर बताये (इसे लिखले तो ज्यादा अच्छा होगा)
९. ऐसे गतिविधियों में भाग लें और विकसित करे जिनसे नये विश्वासी को शिक्षा मिलती है । (उदा. मित्रता बढाओं, उन्हे पवित्रशास्त्र अध्ययन या चर्चा के लिये एकत्रित करो, उन्हे साथ लेकर चर्च या घरों में जाओं)
१०. पूरे संसार में गरीब और जरूरतमन्दों के बारे में चेतना जाग्रत करें ।
११. जिन लोगों को परमेश्वर के राज्य के प्रदर्शन की आवश्यकता है और ऐसी परिस्थितियों के बारे में चेतन रहे और सुचारू ढंग से प्रतिक्रिया करें (जैसे भुखों को खाना खिलाना, बच्चों के साथ खेलना, कुडा कचरा उठाना, कबाडी में से सुन्दर वस्तुयें बनाना, बुर्जुगों की मदद करना, दुरू की घडी में मुस्कान लाना)
१२. यीशू द्वारा दी गई अन्तिम आदेश के अनुसार संसार में चल रहे मिशन के दर्जे को समझने में बढना ।
१३. ऐसे राष्ट्रों या लोगों के समूहों को जिनको सुसमाचार लगभग नही मिला है उनके लिये बोझलेना (जैसे प्रार्थना करना, जाकर सहायता देना)
१४. दूसरों के विचारों को, स्वप्नों को, वरदानों को कौशल्यों को और योग्यताओं को जानबुझ कर सामने लाना, पहचानना, और उनका उपयोग करना ।
१५. खुद के वरदानों के लिये और परमेश्वर के द्वारा दिये गये योजनाओं को खोजने में सहायक कहो इसलिये दूसरों से उनके विचारों को प्राप्त करे ।
१६. ऐसी बातों को बार बार करें जो व्यक्ति के वरदानों और प्रेरणाओं को सहायता देता है या उपयोग करता है उस रूप में जिसमें उन्हे वर्तमान में समझा जा रहा है ।
१७. एक दूसरें के लिये प्रार्थना करो ताकि तुम परमेश्वर की इच्छज्ञ को जानने और करने के लिये दृढ बन सको ।
१८. इस बात पर विचार करें कि कोई व्यक्ति उन सब बातों को जिन्हे परमेश्वर ने दिया है, कैसे उपयोग कर सकते है ताकि अधिकतम फर्क दिखाई दे ।
१९. एक दूसरे को चुनौती दो और प्रोहत्साहित करो कि परमेश्वर द्वारा दिये गई सामान्य और विशष बुलाहट का डीटीएस के बाद भी पालन कर सको चाहे वह किसी भी संदर्भ में हो (उदा. एक मिशन एजेन्सी के साथ, या किसी व्यवसाय में, या आगे प्रशिक्षण के लिये)
२०. व्यक्तिगत तौर पर वे अवसर ढूंढो जिनसे परमेश्वर की सेवा कर सकते हो आगे प्रशिक्षण भी है यदि जरूरी है तो ।
२१. दूसरे राष्ट्रों और संस्कृति और अनजानी स्थितियों में लोगों से संबन्ध बना और उनकी सेवा करो ।
२२. विशेष लोगों के समूह के लिये शोध करो, अध्ययन करो और प्रार्थना करो ।
२३. विभिन्न तरीकों से मष्तिष्क पर प्रभाव डालने वाले/सांस्कृति/संस्थाओं से संम्पर्क करे (उदा. एक मस्जिद मे जाये समाचार देखे, थियेटर जायें, सरकार के लिये प्रार्थना करे)
२४. इस श्रेणी से संबन्धित शास्त्र पाठको पढे और मनन करे ।

यूविअमि– परमेश्वर को प्रत्युत्तर

परमेश्वर को जानना और उसे प्रगट करना

VI. YWAM : A Response to God

Knowing God and Making Him Known

समझने और उपयोग करने के लिये विचार

१. यूविअमि अन्रराष्ट्रीय के इतिहास स्वप्न की उद्देश्य कथन की, विश्वास वचन, की मनीला वाचा की और स्वीकार किये गये दस्तावेजों की समझ (जैसे लालसमुद्र की वाचा) । ये स्वीकार किये गये दस्तावेज रा के वि. वि. के सन्दर्भ मार्गदर्शिका में मिलते है ।

२. यूविअमि के मूल्यों और मूलभूत मूल्यों से प्रगट होने वाले सिध्दान्तों और क्रिश्चन मेग्ना कार्टा की समय। ये स्वीकार किय गये दस्तावेज रा. के. वि. वि. के संदर्भ मार्गदर्शिका में मिलते है ।

३. यूविअमि की तीन स्तरीय मिनिस्ट्री बुलाहट की समझ सुसमाचार प्रचार/मोर्चे पर मिशन, प्रशिक्षण और मर्सी मिनिस्ट्रीज सहित इसी प्रकार की बुलाहट वाली अनेक मिनिस्ट्रीज । "गोमेन्यूएल, ग्लोबल परस्पेक्टिव्हस, रा. के वि. वि. का केलेलॉग, और यूविअमि के अन्य कई मिनिस्ट्री संसाधन सामग्री को पढे ।"

४. डीटीएस यूविअमि के प्रवेशका द्वार है यह समझना और मिनिस्ट्रीज परिवार में प्रवेश का भी और इससे मिशन के लिये सामान्य आधारशिला रखी जाती है । डीटीएस प्रोरिक्वोजिट यूविअमि/रा के वि. वि. डीटीएस विवरण, उद्देश्य और पाठयक्रम, यूविअमि/रा के वि. वि. के डीटीएस की मार्गदर्शिका को देखे ।

५. यह समझना कि बुनियादी तौर पर यूविअमि एक प्रेरितीय मिशन है जिसके द्वारा परमेश्वर नयी वस्तुओं कर रहा है उनको खोदने का काम हो रहा है ।

६. डीटीएस के बाद सेवा करने के विशेष अवसर जो यूविअमि में मिलते है उनकी समझ ।

मनोभाव जिनका पालनपोषन करना है ।

यूविअमि के सम्बन्ध में : विश्वव्यापी आन्दोलन का एक भाग जिसमें सेवकाई, विश्वासपात्रता, टीमवर्क, समर्पितता, नम्रता, दूसरों की बुलाहट का आदर, देना, सोचने और करने का तरीका, एक दूसरे का आदर सम्मान करना, लचीलापन, उदार, मदद करने वाला, मेजवान, सम्बन्धों को बनाये रखने की इच्छा और समर्पण, सिखाने योग्य, पूरे व्यवस्था का एक भाग । की जाने वाली गतिविधियॉ :

करेन योग्य गतिविधियॉ

(ये पूरे डीटीएस में होना चाहिये । कुछ को रोजनामचे में ढ़ाला गया है कुछ को अन्तर क्रिया के रूप में प्रगट किया गया है । उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने इस प्रकार से अपने को व्यस्त कर लेने की जबाबदारी लेना है ।)

१. यूविअमि के इतिहास का परिचय करो, खोजकरों और समझो ("क्या यह तू है प्रभू" की कहानियॉ पढने को कहो जिसे लॉरेन कनिघंम ने लिखा है, साद दूसरी यूविअमि की किताबे/कहानिया)

२. इसप्रकार से रहे और कार्य करे कि इनसे यूविअमि के मूल्यों का प्रगटीकरण हो और यूविअमि के उद्देश्य कथन विश्वास और मिशन की घोषणा हो ।

३. यूविअमि के केटेलॉग को जॉच कर देखो कि प्रशिक्षण के आगे क्या अवसर है ।

५. डीटीएस के बाहर के यूविअमि केन्द्र, मिनीस्ट्रीज और कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करना (जैसे दूसरे केन्द्रो का भ्रमण करना यूविअमि के व्हिडीओं फिल्म देखना, वक्ताओं से सम्पर्क करना)

६. डीटीएस के बाद यूविअमि को सेवा करने के लिये अवसरों की खोज करना ।

७. यूविअमि के त्रीस्तरीय बुलाहट कों प्रदर्शित करने में कार्यरत रहना

८. जैसा परमेश्वर अगुवाई करे वैसा ही यूविअमि के साथ सम्पर्क करे ।

सुझाव : इन सुझावों और गतिविधियों को डीटीएस के प्रति सप्ताह कार्यक्रम में एकीकृत करे ।

पाठयक्रम के स्वरूप के बारे में एक नोट –

दी गई धारणा की सूची वक्ताओं और विषयों के चुनाव में सहायक हो सकती है पर यह सप्ताह के शिक्षण की रूपरेखा नही है क्योंकि वक्ता दूसरी अन्य श्रेणियों में से विषय को चुन सकते है । साथ ही इसे सप्ताह दर सप्ताह शाला का मार्गदर्शन करने में चेक लिस्ट करके उपयोग की जा सकती है । जैसा शाला सत्र आगे बढती है, शाला के अगुवे इस सूची के आधार पर इस बात का पता रख सकते है कि वक्ताओं ने या किताबों में कौन से विषय पूरे हो गये है ताकि बचे हुये विषयों को वे दूसरे ढ़ंग से पूरा कर सके (पवित्रशास्त्र अध्ययन अराधना–भक्ति आदि)

विषय – प्रत्येक श्रेणी में लिये गये विषयों को डीटीएस के सन्दर्भ में ही सिखाख है । नीचे दी गई सूची में कुछ विषय है जो सप्ताह के पूरे या कुछ प्रशिक्षण के लिये है जो आवश्यकताओं की पूर्ती करता है । एक विषय में दूसरी श्रेणी के विषय भी आ सकते है । याद रखे कि ये विषय दी गई धारणा को पूरा करने के संभावित तरीके है ।

१. परमेश्वर का स्वभाव और चरित्र (I)
२. स्वत: के व्यक्तिगत संबन्ध को परमेश्वर के साथ मजबूत करना, परमेश्वर की आवाज सुनकर (I)
३. अराधना और प्रार्थना (I)
४. पवित्रशास्त्र अध्ययन के द्वारा अपनी आत्मिक भूख मिटाना (I)
५. सांस्कृतिक अधिकार/परमेश्वर का राज्य (II, V)
६. निवेदन की प्रार्थनाये । (I, II, V)
७. ईश्वरीय संबन्ध (II, IV)
८. लेपालकपन / कार्य (II,V)
९. परेश्वर के साथ रचना करना (I, IV, V)
१०. पवित्रशास्त्र मे दिये गये संसार का दृष्य (सभी श्रेणीयों में मुख्य धारणाये है ।)
११. आत्मिक युध्द (III, V)
१२. यीशू – व्यक्ति और कार्य – क्रूस (I, III, IV)
१३. प्रमुख भय (I, III, IV)
१४. परमेश्वर का पिता समान हृदय (I, IV)
१५. पाप, पश्चाताप और पुर्नवास (III, IV)
१६. सीधी रेखा (III, IV) (यह डिटीएस में अनिवार्य नही है)
१७. अधिकारों को छोडना (III, IV)
१८. ख्रिस्त के साथ पहचान (III, IV)
१९. मष्तिष्क का नवीनीकरण (III, IV)
२०. पवित्रत्मा–एक व्यक्ती और कार्य (I, IV, V)
२१. शरीर संबन्ध–दोस्ती, पतीपत्नी, मातापिता–बच्चे, विपरीत लिंगवालोके साथ (III, IV)
२२. परमेश्वर की बुलाहट (V)
२३. वरदान/बुलाहट/नियती (IV, V)
२४. सामुदायीक जिवन/समाज/टिमवर्क (VI)
२५. अब्राम के साथकी गईवाचा (I, II, IV)
२६. बडे कार्य के लिये दिया गया अधिकार (III, IV)
२७. सुसमाचार विस्तार का इतिहास (V)
२८. भटके हुओ के साथ सुसमाचार बॉटना (IV, V)
२९. अन्तर सांस्कृतीक संचार के मूलभूत सिध्दान्त (VI)

३०. भटके हुओ के लिये हृदय मे बोझ (I, III, V)

३१. जिनतक सुसमाचार नही पंहुचा ऐसे लोग (V)

३२. गरीब और जरूरत मंद (I, V)

३३. सबलोगों को चेला बनाना (II, V)

उपयोग करने के लिये प्रारूप के बारे में सुझाव

१. कक्षा में अगुवाई एक व्याख्यान के बाद कक्षाकों कार्यकर्ता समझाते है कि परमेश्वर क्या कह रहा है और उन्हे व्यक्तीगत प्रत्यूतर देने का अवसर देते है ।

२. छोटे छोटे समूह बनाये जाते है जो नियमित रूप से मिलते है

३. व्याख्यान चलते समय छोटे छोटे समूहों को बनाना

४. एक पर एक

५. पत्रिका

६. सूचनादेना/समयबॉटना – प्रत्येक व्यक्ती को अवसर दिया जाय की वह समूह को अपना अनुभव बता सके ।

७. सभी श्रेनियो को जीवन मे उपयोग करने के लिये सुसमाचार प्रचार के सप्ताह महत्वपूर्ण है ।